सुमनमुनि पद्ममहर्षी ग्रन्थ (फोल्डर नं. ९२०२७)

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय
संपादकीय
प्रस्तावना
अनुक्रम
प्रथम खण्ड – वंदन-अभिनंदन
गद्य विभाग
आप हमारी भुजा हैं ---------- १
श्रमण संस्कृति के गौरवशाली सन्त ---------- १
वन्दन-अभिनन्दन ----------२
शुभाशीर्वचनम् ----------२
मेरा हार्दिक आशीष ----------३
गौरवास्पदमदीयम् ----------३
मंगल कामना ----------३
स्नेह सुमनाञ्जलि ---------- ४
स्पष्टवक्ता एवं अनुशासन प्रिय ---------- ४
महापुरुष ---------- ४
मेरी आस्था के देवता ---------- ४
विराट् व्यक्तित्व के धनी ---------- ५
गुणों के धारक महापुरुष ---------- ७
बहुमुखी व्यक्तित्व ----------८
शांतिदूत ----------८
आन्तरिक शुभाशंषा ---------- ९
मेरी अनन्त आस्थआ के केन्द्र-पूज्य गुरुदेव ---------- १०
कुछ कर गुजरने की तमन्ना ----------१२
गुजरात को भी पावन करें ----------१३
फैले यश सौरभ, दिन दूना, रात चौगुना ----------१३
उदारचेता श्रमण ---------- १४
गुरुदेव सुध लो अपने वतन की ---------- १४
यथानाम तथा गुण सम्पन्न मुनिराज ---------- १४
सुमन सुरभि ---------- १५
दिव्य गुणों के धनी ---------- १६
वात्सल्यमूर्ति ---------- १७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीर प्रभु के अमर सेनानी श्रु सुमन मुनि जी -- १७
जीवन शिल्पी, प्रबुद्ध कलाकार, कुशल चितेरे -- १७
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी -- १९
ज्योतिर्मय व्यक्तित्व के प्रतीक --- २०
दिव्यविभूति --२१
जैन जगत् के चमकते सितारे ---२१
जैन जगत् के गौरवशाली सन्त --- २२
संयमनिष्ठ मुनिराज -- २२
अभिनन्दनाञ्जलि --- २३
धर्म दिवाकर -- २३
चिरायु जीवन की कामना -- २३
धन्य है आपकी अद्वितीय साधना --- २४
समन्वयवादी विचारों के धनी --- २५
गिरा अनयन नयन बिनु वाणी --- २५
गुणों के सागर -- २७
प्राकृत भाषा प्रचारकौ --- २८
ज्ञान-दर्शन-चारित्र की त्रिपथगा --- २९
संतप्रवर-सुमन मुनिवर --- २९
निष्कलंक व्यक्तित्व --- ३३
जैन दर्शन के प्रकांड पंडित-- ३३
प्रज्ञामहर्षि-श्री सुमनमुनि जी महाराज-- ३४
चलता फिरता मसीहा -- ३७
ज्ञान-सागर से निकला अमृत --- ३८
सर्वतोभद्र व्यक्तित्व के धनी --- ४१
चरण कमलों में वनदन -- ४१
उद्बोधन के माध्यम से -- ४२
चरित्रात्मा -- ४३
दीर्घ अनुभवी स्पष्टवक्ता --- ४४
भीष्म पितामह-से -- ४४
महामना संत --- ४४
गरिमा-महिमा की बात -- ४५
पंडितरत्न मुनि श्री सुमनकुमारी जम. एक संस्मरण ------------------------------- ४५
सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय --- ४६
अर्पित है मंगलमयी भावना --- ४७
यथनाम तथागुण -- ४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरुदेव मेरे, मैं उनका -- ४८
सुरभित हो ज्यों चन्दन --- ४८
अनुभव शास्त्र के धनी -- ४९
अनंत उपकारी गुरुदेव --- ४९
आध्यात्मिक साधना के प्रभावी उद्घोषोक -- ५०
संयम के महासाधक --- ५५
विराट् व्यक्तित्व के धनी -- ५६
माधुर्य, सरलता, सद्भावना के प्रतीक -- ५९
देदीप्यमान जीवन --- ६०
प्रभाव-गुरुदेव के उपदेश का -- ६०
अभिनन्दन-संयमी जीवन का -- ६१
जैन समाज के ज्वाजल्यमान नक्षत्र --- ६१
एक आदर्श महापुरुष--- ६१
श्रमण संघ की शान -- ६२
मेरे विचार --- ६३
नई पीढ़ी के मार्दर्शक -- ६४
करुणाशील निर्ग्रन्थ -- ६४
ज्ञानी एवं दार्शनिक महापुरुष -- ६५
जिनवाणी के सफल जादूगर -- ६६
सरस्वती पुत्र-मुनि श्री समुमनकुमारजी -- ६७
श्रमणसंघ का अद्वितीय सुमन --- ६८
महावीर-सिद्धआंतो के कुशल संवाहक संत --- ६९
गुरु शुक्ल के सच्चे उत्तराधिकारी -- ६९
अविस्मरणीय हैं और रहेंगे -- ७०
सुमनाः सुमनाः --- ७१
सुमन-सौरभ--- ७३
सरलता साधुता के प्रतीक --- ७३
संयम का अभिनन्दन--- ७३
साधना सम्पन्न महानयोगी -- ७४
लोक में आलोक के प्रतीक --- ७४
प्रकाष पुरुष गुरुदेव --- ७५
स्व पर कल्याण रत गुरुदेव --- ७५
अभिनन्दन एवं मंगल कामना --- ७५
एक बहुआयामी व्यक्तित्व -- ७६
मृदु-हृदय मुनिराज -- ७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संयम को नमन -- ७७
पूज्य गुरुदेव का चमत्कारी व्यक्तितत्व -- ७८
सामाजिक चेतना के संवाहक-- ७८
शत-शत अभिनन्दन --- ७९
वीतराग वाणी के महान् व्याख्याता -- ७९
अभिनन्दन एवं मंगलकामना --- ८०
यशस्वी मुनि पुङ्गव -- ८०
Sri Suman Muniji ---81

पद्य विभाग

यशोगानम् -- १
मेरे मन को सुमन बना दो -- १
जिनशासन सिणगार -- १
सुमन-गौरव-गाथा ---२
श्रमणरत्न श्री सुमनमुनि -- ५
श्रमणसंघ की ढाल, हृदय से विशाल --- ५
कितने सच्चे, कितने अच्छे मेरे गुरुवर -- ६
सुमन की सौरभ -- ६
सब ही तदेते बधाई -- ७
जय-जय सुमनमुनि गुणवान --- ७
युग-युग जिओ गुरुवर --८
शांति का बिगुल बजाते है -- ९
सुमन सौरभ -- ९
संयम की उज्ज्वल ज्योति -- ९
ज्ञान प्रकाश फैलायो संघ में--- १०
शुभ दिन आज है -- १०
मुनि जीवन की शान --- ११
श्रमण संघ की शान -- ११
विरागी का विरागाभिनन्दन --१२
सुमणत्थुई --१२
लाखों लाख बधाई --१३
श्रद्धा-पुष्प -- १४
मंजुल व्यक्तित्व विशाल -- १५
ऐसा वरदान दे दो गुरुवर -- १५
भक्ति के सुमन अर्पण करू मैं -- १६
हार्दिक वन्दन-अभिनन्दन -- १६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरुवर सुमन मुनि जी -- १६
द्वितीय खण्ड-परम्परा
श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी श्रमण-परंपरा -- १
पंजाब श्रमणसंघ की आचार्य परम्परा -- १७
अ.भा.स्था. वर्धमान श्रमणसंघ के आचार्यों का संक्षिप्त जीवन परिचय --------------------------३१
प्रवरर्तक पं.र. श्री शुक्लचन्द्रजी महाराज -- ३५
गुरुदेव पं. रत्न श्री महेन्द्रकुमारजी महाराज -- ४७
श्रद्धेय चरितनायक गुरुदेव का शिष्य परिवार -- ५१
गुरुदेव श्री शुक्लचन्द्रजी महाराज के शिष्य रत्न -- ५३
पंजाब श्रमणी परंपरा -- ५८
तृतीय खण्ड-सर्वतोमुखी व्यक्तित्व
सर्वतोमुखी व्यक्तित्व ---१-११२
चतुर्थ खण्ड-सुमन साहित्य एक अवलोकन
श्री सुमनमुनि जी की साहित्य साधना--- १
मत अभिमत --- २०
श्री सुमनमुनि जी का सर्जनात्मक साहित्य -- २५
एक लघु साक्षात्कार -- ३०
सुमन वचनामृत -- ३२
पंचम खण्ड-जैन संस्कृति का आलोक
हिन्दी विभाग
अनेकान्त-समन्वय का आधार – डॉ. प्रेम सुमन जैन -- १
भगवान् महावीर के जीवन सूत्र – श्रीचन्द सुराना -- ७
श्रमण संस्कृति के संरक्षण में चातुर्मास की सार्थक परम्परा – डॉ. राजाराम जैन -----------१२
जैन एकता-आधार और विस्तार – आचार्य विजय नित्यानंदसूरि --------------------------- १६
सामाजिक समरसता के प्रणेता तीर्थंकर महावीर – डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन -------------------२१
अहिंसा परमो धर्मः – स्वामी ब्रह्मेशानन्द -- २४
जैन कर्म सिद्धान्त-नामकर्म के विशेष संदर्भ में – डॉ. फूलचन्द्र जैन ---------------------- ३४
जैन आगमों की मूल भाषा अर्द्धमागधी या शौरसेनी – डॉ. सागरमल जैन ---------------- ४३
जैन साधना और ध्यान – डॉ. छगनलाल शास्त्री -- ६२
साधना और सेवा का महासम्बन्ध – डॉ. सागरमल जैन -------------------------------- ७२
कर्म सिद्धान्त की वैज्ञानिकता – डॉ. जयन्तीलाल जैन ---------------------------------- ७८
विश्व का प्राचीनतम धर्म – श्री मेघराज जैन -- ८३
जैन साधना एवं योग के क्षेत्र में आचार्य हरिभद्र सूरि... – श्री महेनद्रकुमार रांकावत ------ ८८
कषाय क्रोध तत्त्व – प्रो. कल्याणमल लोढ़ा --- ९४
ध्यान और अनुभूति – डॉ. अशोक जैन -- १११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तमिलनाडु में जैन धर्म – पं. श्री मल्लीनाथ जैन -- ११५
श्रमण संस्कृति का हृदय एवं मस्तिष्क – डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन -------------------------- १२६
आत्म साक्षात्कार की कला-ध्यान – आचार्य शिवमुनी -------------------------------------१३१
जैन संस्कृति में नारी का महत्व – साध्वी डॉ. धर्मशिलाश्रीजी ---------------------------- १३६
प्राचीन जैन हिंदी साहित्य में संत स्तुति – साध्वी विजयश्रीजी -------------------------- १४५
धर्म साधना का मूलाधार-समत्वयोग – श्री विनोद मुनि ---------------------------------- १५४
जैनागम पर्यावरण संरक्षण – श्री कन्हैयालाल लोढ़ा -------------------------------------- १६३
ध्यान-स्वरूप और चिंतन – श्री रमेश मुनि --- १७२
तीर्थंकर पार्श्वनाथ का लोकव्यापी व्यक्तित्व और चिंतन – डॉ. फूलचन्द्र जैन -------------- १७८
जैनागम में भारतीय शिक्षा के मूल्य – श्री दुलीचंद जैन ---------------------------------- १८३
English Section
A Brief Account of Jaina Tamil Literature – S. Krishnachand Choradia-------------------1
The Uniqueness of Jain Spirituality – Prof. Ramjee Singh------------------------------------9
Studies on Biology In Tatvartha Sutra – Prof. N. L. Jain ------------------------------------ 17
Mathematical Philosophyhy in the Jaina School of Thought – Prof. L. C. Jain,
S. K. Jain -- 35

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org